ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

200वीं सदैव सत्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

वर्ष 46 | अंक 38 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 04 सितम्बर, 2023 से रविवार 10 सितम्बर, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती के अयोजनों की श्रृंखला हेतु

भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी की अध्यक्षता में, भारत सरकार द्वारा गठित समिति के लिए सभी अधिकारी एवं सदस्यों का आर्य समाज की ओर से हार्दिक आभार

भारत सरकार द्वारा प्रधानमंत्री जी की अध्यक्षता में गठित समिति की सूची

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम	पदनाम
1.	**श्री नरेन्द्र मोदी- भारत के माननीय प्रधानमंत्री**	**अध्यक्ष**
2.	श्री अमित शाह- गृह एवं सहकारिता मंत्री	पदेन सदस्य
3.	श्रीमती स्मृति जुबिन इरानी, महिला एवं बाल विकास और अल्पसंख्यक कार्य मंत्री	पदेन सदस्य
4.	श्री जी. किशन रेड्डी, संस्कृति, पर्यटन और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री	पदेन सदस्य
5.	श्री अनुराग सिंह ठाकुर, सूचना एवं प्रसारण और युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्री	पदेन सदस्य
6.	श्री मल्लिकार्जुन खड़गे, नेता प्रतिपक्ष	पदेन सदस्य
7.	डॉ. पी. के. मिश्रा, प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव,	पदेन सदस्य
8.	श्री आचार्य देवव्रत, राज्यपाल, गुजरात	पदेन सदस्य
9.	श्री बनवारी लाल पुरोहित, राज्यपाल, पंजाब	पदेन सदस्य
10.	श्रीमती आनंदीबेन पटेल, राज्यपान, उत्तर प्रदेश	पदेन सदस्य
11.	श्री कलराज मिश्र, राज्यपाल, राजस्थान	पदेन सदस्य
12.	श्री आर. एन. रवि, राज्यपाल, तमिलनाडु	पदेन सदस्य

- शेष पृष्ठ 3 पर

आर्य समाज की महान विभूतियां श्री बृजमोहन मुंजाल जी एवं पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के 100वें जयंती वर्ष पर

विश्व स्तरीय बृजमोहन मुंजाल वैदिक केंन्द्र एवं महाशय धर्मपाल एमडीएच इंटरनेशनल हाउस का भव्य उद्घाटन समारोह संपन्न

महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती के आयोजनों की विश्व व्यापी श्रृंखला लगातार गतिशील है। भारत के कोने-कोने में और विदेशों में चहुं ओर उमंग उत्साह की लहर है। कहीं पर महर्षि के विशाल प्रेरक चित्र लगे रहे हैं और कहीं पर यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना, समर्पण और सहयोग के कार्य हो रहे हैं, इस समय आर्य समाज हर सामाजिक, राष्ट्रीय और वैदिक पर्व, त्यौहार को 200वीं जयंती के क्रम में पूरी निष्ठा के साथ मना रहा है। कई राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन हो रहे हैं और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी भव्य और विशाल आयोजनों की तैयारियां चल रही हैं।

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 नई दिल्ली- नव निर्मित वैदिक केन्द्र

दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1 में निर्मित अत्याधुनिक 'बृजमोहन मुंजाल वैदिक केंद्र' का भव्य उद्घाटन रविवार, 27 अगस्त, 2023 को संपन्न हुआ। इस अवसर पर यह भी ज्ञात हो कि हीरो ग्रुप के पूर्व चेयरमैन, आर्य समाज की महान विभूति श्री बृजमोहन मुंजाल जी

- शेष पृष्ठ 5 पर

आर्य समाज की संस्थाओं के बच्चों ने राष्ट्रपति महोदय एवं प्रधानमंत्री जी को बांधी राखी

आर्य गुरुकुल रानी बाग, आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार और रतन चंद सूद आर्य पब्लिक स्कूल के छात्र-छात्राएं राखी बांधकर आशीर्वाद लेते हुए

वैदिक संस्कृति में पर्वों का अपना विशेष महत्व है। हमारे यहां सामाजिक और राष्ट्रीय पर्वों को पूरी वैदिक रीति से मनाने की परंपरा चली आ रही है। पर्व के पीछे निहित प्रेरणा को आत्मसात करते हुए पारिवारिक, सामाजिक और संस्थागत स्तर पर भी पर्वों के आयोजन पूरे विधि विधान से किए जाते हैं इस वर्ष रक्षाबंधन के पर्व पर रतन चंद पब्लिक स्कूल सरोजिनी नगर, आर्य गुरुकुल रानी बाग और आर्य कन्या

- शेष पृष्ठ 5 पर

वेदवाणी-संस्कृत

परम प्रिय सच्चिदानन्दरूपिणी परमात्मा देवता

बालादेकमणीयस्कमुतैकं नेव दृश्यते।
ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया॥

-अथर्व० 10 । 8 । 25

ऋषिः-कुत्सः॥ देवता-आत्मा॥ छन्दः-अनुष्टुप्॥

शब्दार्थ- एकम्=एक **बालात्**=बाल से भी **अणीयस्कम्**=बहुत अधिक सूक्ष्म, अणु है **उत**=और **एकम्**=एक **न इव**=नहीं की भाँति **दृश्यते**=दिखता है। **ततः**=उससे परे **परिष्वजीयसी**=उसे आलिङ्गन किए हुए, उसे व्यापे हुए **देवता**=जो देवता है **सा**=वह **मम**=मुझे **प्रिया**=प्यारी है।

विनय- मुझमें प्रेमशक्ति किस प्रयोजन के लिए है? मेरे प्रेम का असली भाजन कौन है? यह खोजता हुआ जब मैं संसार को देखता हूँ तो इस संसार में केवल तीन तत्त्व ही पाता हूँ, तीन तत्त्वों में ही यह सब कुछ समाया हुआ देखता हूँ। इनमें से पहला तत्त्व बाल से भी बहुत अधिक सूक्ष्म है। बाल के अग्रभाग के सैकड़ों टुकड़े करते जाएँ तो अन्त में जो अविभाज्य टुकड़ा बचे उस अणु, परम अणुरूप का यह तत्त्व है। प्रकृति के इन्हीं परमाणुओं से यह सब दृश्य जगत् बना है। इनसे भी सूक्ष्म दूसरा तत्त्व है, पर इसकी सूक्ष्मता दूसरे प्रकार की है; इसकी सूक्ष्मता की किसी भौतिक वस्तु से तुलना नहीं की जा सकती। यह तत्त्व ऐसा अद्भुत है कि यह नहीं के बराबर है। यह है, किन्तु नहीं जैसा है। इस दूसरे तत्त्व से परे और इससे सूक्ष्म और इसे सब ओर से आलिंगन किए हुए, व्यापे हुए, एक तीसरा तत्त्व है, तीसरी देवता है। यही देवता मुझे प्रिय है। पहली प्रकृति देवता जड़ और निरानन्द होने के कारण मुझे प्रिय नहीं हो सकती। दूसरी वस्तु मैं ही हूँ, मेरी आत्मा है। मैं तो स्वयं देखने वाला हूँ, तो मैं कैसे दिखूँगा? अतः मैं नहीं के बराबर हूँ। मैं तो प्रेम करने वाला हूँ, अतः प्रेम का विषय नहीं बन सकता। अतएव मेरे सिवाय मेरे सामने दो ही वस्तुएँ रह जाती हैं, यह प्रकृति और वह सच्चिदानन्दरूपिणी परमात्म-देवता। इनमें से चित्स्वरूप मुझे यह चैतन्य और आनन्द से शून्य प्रकृति कैसे प्रिय हो सकती है? मेरा प्यारा तो स्वभावतः वह दूसरा देवता है जोकि मेरी आत्मा की आत्मा है, जोकि मेरी आत्मा से परिष्वक्त हुआ इसमें सदा व्यापा हुआ है और जो मुझे आनन्द दे सकता है। मैं तो प्रकृति से हटके अपने उस प्यारे परमात्मा की ओर दौड़ता हूँ। मैं स्पष्ट देखता हूँ कि अपने प्रेम द्वारा उसे पा लेने पर मेरी भटकती हुई प्रेम-शक्ति अपने प्रयोजन को पा लेगी, उसे पा लेने पर मेरा सम्पूर्ण प्रेम चरितार्थ और कृतकृत्य हो जाएगा।

-:साभार:- वैदिक विनय

वेद-स्वाध्याय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

शिक्षक जगत के लिए प्रेरणा के प्रकाश स्तंभ

आदर्श गुरु शिष्य परंपरा के संवाहक महर्षि दयानंद सरस्वती जी एवं गुरु विरजानंद दंडी

भारत गुरु ज्ञानियों का देश है। यहां समय-समय पर हमारे महापुरुषों ने अपने गुरुजनों के चरणों में बैठकर तप, त्याग और समर्पण के साथ शिक्षा प्राप्त करके अपने निजी जीवन, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व धरा को गरिमा प्रदान की है। योगदर्शन में ईश्वर को गुरुओं का भी गुरु बताया है। माता-पिता और आचार्य को भी गुरु माना गया है। वस्तुतः गुरु शब्द का अर्थ है अंधेरे से प्रकाश की ओर अग्रसर करने वाला। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम और उनके भाइयों ने महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र जी से वेदादि शास्त्रों की शिक्षा प्राप्त कर अधर्म, अन्याय, अनीति, अत्याचार को समाप्त किया, योगीराज श्रीकृष्ण ने महर्षि संदीपनी के चरणों में बैठकर विद्या अर्जन कर समाज को धर्म की राह पर चलना सिखाया, गुरु शिष्य परंपरा की यह श्रृंखला बहुत विस्तृत है, इस क्रम में महर्षि दयानंद सरस्वती ने प्रज्ञा चक्षु गुरु विरजानंद के सान्निध्य में शिक्षा प्राप्त कर भारत में छाए हुए अज्ञान, अविद्या के अंधेरे को तिरोहित किया और दोनों आदर्श गुरु शिष्यों के सम्मिलन से आर्य समाज जैसी महान संस्था का उदय हुआ, जिसने लगभग 150 वर्षों के इतिहास में भारत देश की आजादी से लेकर, जात-पात, ऊंच-नीच के भेदभाव से भारत को मुक्ति दिलाने का ऐतिहासिक कार्य किया, नारी शिक्षा का प्रारंभ, बालविवाह पर प्रतिबंध और विधवाओं को विवाह करने का अधिकार दिलाया, समाज में फैले ढोंग पाखंड, अंधविश्वास को दूर हटाकर वैदिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी आर्य समाज की ही देन है। यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सेवा, सत्संग, साधना की आदर्श परंपरा को पुनः स्थापित करने वाले आर्य समाज की इन समस्त उपलब्धियों का श्रेय जहां इसके संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी को समर्पित है, वहीं उनके गुरु प्रज्ञा चक्षु स्वामी विरंजानंद जी का तपोबल भी स्तुत्य है। महर्षि की प्रेरणा से शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज ने गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, डी.ए.वी. शिक्षण संस्थान और अनेक अन्य शिक्षण केंद्र स्थापित कर नए आदर्श मानक सिद्ध किए हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर दो वर्षीय आयोजनों के मध्य शिक्षक दिवस 5 सितंबर 2023 की समस्त शिक्षक जगत को आर्य समाज की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

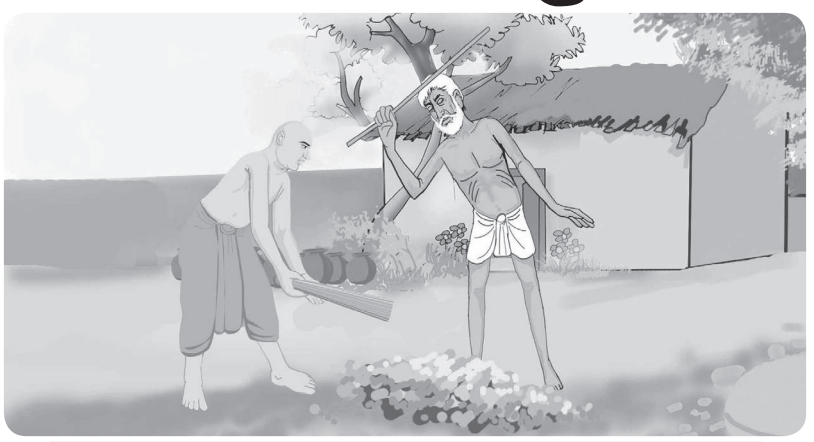

"सन् 1860 ईस्वी में 35 वर्ष की अवस्था में महर्षि दयानंद सरस्वती स्वामी विरजानंद जी की तपस्थली मथुरा पहुंचे। इससे पूर्व 21 वर्ष की युवा अवस्था में आपने माता-पिता का प्रेम प्यार और सुख सुविधाओं से सुसंपन्न घर का त्याग किया था। इस बीच के 15 वर्ष के काल खंड में महर्षि नगर-नगर, जंगल-जंगल, पर्वत-पर्वत आदि अनेकानेक स्थानों पर सच्चे शिव और कल्याणकारी गुरु की तलाश में भ्रमण करते रहे। जब वे गुरु विरजानंद दंडी जी के द्वार पर पहुंचे और उनकी कुटिया की कुंडी खटखटाई तब गुरु ने पूछा कौन हो? महर्षि दयानंद ने उत्तर में कहा कि यही तो जानने आया हूं कि मैं कौन हूं? यह स्वामी विरजानंद के प्रश्न का उत्तर तो नहीं था, बल्कि गुरु के प्रश्न पर शिष्य का प्रश्न ही था। किंतु गुरु ने तो सरल प्रश्न ही किया था, इस पर इतना कठिन प्रश्न करने वाला कोई साधारण व्यक्ति तो नहीं होगा? गुरु विरजानंद जी समझ गए थे कि यह शिष्य असाधारण और महान जिज्ञासु है, गुरु विरजानंद जी का अंतःकरण भी शायद प्रफुल्लित हो गया होगा क्योंकि वे भी एक योग्य शिष्य की खोज में रहे होंगे।"

गुरु से शिष्य की भेंट

सन् 1860 ईस्वी में 35 वर्ष की अवस्था में महर्षि दयानंद सरस्वती स्वामी विरजानंद जी की तपस्थली मथुरा पहुंचे। इससे पूर्व 21 वर्ष की युवा अवस्था में आपने माता-पिता का प्रेम प्यार और सुख सुविधाओं से सुसंपन्न घर का त्याग किया था। इस बीच के 15 वर्ष के काल खंड में महर्षि नगर-नगर, जंगल-जंगल, पर्वत-पर्वत आदि अनेकानेक स्थानों पर सच्चे शिव और कल्याणकारी गुरु की तलाश में भ्रमण करते रहे। जब वे गुरु विरजानंद दंडी जी के द्वार पर पहुंचे और उनकी कुटिया की कुंडी खटखटाई तब गुरु ने पूछा कौन हो? महर्षि दयानंद ने उत्तर में कहा कि यही तो जानने आया हूं कि मैं कौन हूं? यह स्वामी विरजानंद के प्रश्न का उत्तर तो नहीं था, बल्कि गुरु के प्रश्न पर शिष्य का प्रश्न ही था। किंतु गुरु ने तो सरल प्रश्न ही किया था, इस पर इतना कठिन प्रश्न करने वाला कोई साधारण व्यक्ति तो नहीं होगा? गुरु विरजानंद जी समझ गए थे कि यह शिष्य असाधारण और महान जिज्ञासु है, गुरु विरजानंद जी का अंतःकरण भी शायद प्रफुल्लित हो गया होगा क्योंकि वे भी एक योग्य शिष्य की खोज में रहे होंगे, क्योंकि गुरु चाहे कितना भी बड़ा ज्ञान विज्ञान का सागर क्यों न हो, अगर उसे सुपात्र और सुयोग्य शिष्य न मिले तो वह अपनी ज्ञान संपदा की धरोहर किसी को कैसे सौंपे? यहां महान गुरु और महान शिष्य का सम्मिलन हो रहा था, दोनों एक दूसरे की परीक्षा ले रहे थे। गुरु समझ गये कि द्वार पर सच्चा सुपात्र शिष्य आया है, गुरु विरजानंद जी ने अपनी कुटिया का द्वार खोल दिया, और इसके साथ ही मानिए कि भारत राष्ट्र के सौभाग्य का द्वार भी खुल गया।

गुरु की पहली आज्ञा को महर्षि ने कैसे माना

महर्षि ने स्वामी विरजानंद जी से शिक्षा प्रदान करने हेतु प्रार्थना की।

- शेष पृष्ठ 7 पर

पृष्ठ 1 का शेष

भारत सरकार द्वारा प्रधानमंत्री जी की अध्यक्षता में गठित समिति की सूची

13.	श्री बंडारूदत्तात्रेय, राज्यपाल, हरियाणा	पदेन सदस्य
14.	श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर, राज्यपाल, बिहार	पदेन सदस्य
15.	लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) गुरमीत सिंह, राज्यपाल, उत्तराखंड	पदेन सदस्य
16.	डॉ सी. बी. आनंद बोस, राज्यपाल, पश्चिम बंगाल	पदेन सदस्य
17.	श्री गुलाब चंद कटारिया, राज्यपाल, असम	पदेन सदस्य
18.	सुश्री ममता बनर्जी, मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल	पदेन सदस्य
19.	श्री मनोहर लाल खट्टर, मुख्यमंत्री, हरियाणा	पदेन सदस्य
20.	श्री नीतीश कुमार, मुख्यमंत्री, बिहार	पदेन सदस्य
21.	श्री योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश	पदेन सदस्य
22.	श्री अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान	पदेन सदस्य
23.	श्री प्रेम सिंह तमांग, मुख्यमंत्री, सिक्किम	पदेन सदस्य
24.	श्री एम. के. स्टालिन, मुख्यमंत्री, तमिलनाडु	पदेन सदस्य
25.	श्री हेमंत बिस्वा सरमा, मुख्यमंत्री, असम	पदेन सदस्य
26.	श्री पुष्कर सिंह धामी, मुख्यमंत्री, उत्तराखंड	पदेन सदस्य
27.	श्री भूपेन्द्रभाई पटेल, मुख्यमंत्री, गुजरात	पदेन सदस्य
28.	श्री भगवंत सिंह मान, मुख्यमंत्री, पंजाब	पदेन सदस्य
29.	डॉ. संजीव कुमार बालियान, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री	पदेन सदस्य
30.	श्री राजीव गौबा, मंत्रिमंडल सचिव	पदेन सदस्य
31.	श्री अजय कुमार भल्ला, गृह सचिव	पदेन सदस्य
32.	श्री गोविंद मोहन, सचिव, संस्कृति मंत्रालय	सदस्य सचिव
33.	डॉ. सत्यपाल सिंह, पूर्व मंत्री, भारत सरकार	सदस्य
34.	स्वामी सुमेधानंद सरस्वती, संसद सदस्य (लोक सभा)	सदस्य
35.	बाबा रामदेव, पतंजलि योगपीठ	सदस्य
36.	श्री कमलेश पटेल, श्री राम चंद्र मिशन	सदस्य
37.	स्वामी सुवीरानंद, रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन	सदस्य
38.	प्रोफेसर योगेश सिंह, कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय	सदस्य
39.	प्रोफेसर रमा शंकर दुबे, कुलपति, गुजरात केंद्रीय वि. विद्यालय	सदस्य
40.	प्रो. सुधीर जैन, कुलपति, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय	सदस्य
41.	प्रो. बासुधकर जगदीश्वर राव, कुलपति, हैदराबाद का केन्द्रीय विश्वविद्यालय	सदस्य
42.	डॉ. पूनम सूरी अध्यक्ष, डीएवी प्रबंधन समिति	सदस्य
43.	श्री सुरेश चंद्र आर्य, अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा	सदस्य
44.	श्री सुरेंद्र कुमार आर्य, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ	सदस्य
45.	श्री धर्मपाल आर्य, अध्यक्ष, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	सदस्य
46.	श्री सुमन कांत मुंजाल, अध्यक्ष रॉकमैन इंडस्ट्रीज	सदस्य
47.	स्वामी धर्मानंद सरस्वती, प्रमुख, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा, ओडिशा	सदस्य
48.	स्वामी सदानंद, प्रमुख, दयानंद मठ, दीना नगर, पंजाब	सदस्य
49.	स्वामी आर्य वेश आर्य, विद्वान और संन्यासी हरियाणा	सदस्य
50.	आचार्य एम. आर. राजेश, अध्यक्ष कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन, कोझिकोड, केरल	सदस्य
51.	श्री अजय सहगल, सचिव, श्रीमद दयानंद सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा	सदस्य
52.	श्री दीन दयाल गुप्ता, संरक्षक, एपीएस, पश्चिम बंगाल	सदस्य
53.	श्री सुदर्शन शर्मा, प्रमुख, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब	सदस्य
54.	श्री भुवनेश खोसला, प्रमुख, आर्य प्रतिनिधि सभा, संयुक्त राज्य अमेरिका	सदस्य
55.	श्री विश्रुत आर्य, सचिव, आर्य प्रतिनिधि सभा, संयुक्त राज्य अमेरिका	सदस्य
56.	श्री हरिदेव राम धोनी, प्रतिनिधि, आर्य सभा, मॉरीशस	सदस्य
57.	श्री सुरेंद्र विजय सिंह महाबली, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, नीदरलैंड	सदस्य
58.	श्री इंद्र गंगा बिशन सिंह, प्रधान, आर्य दिवाकर, सूरीनाम	सदस्य
59.	श्री योगेश आर्य, संयोजक, आर्य समाज, प्रशांत क्षेत्र, सिडनी, ऑस्ट्रेलिया	सदस्य
60.	डॉ. बिसराम रामविलास, आर्य समाज, दक्षिण अफ्रीका	सदस्य
61.	श्री सुभाष चंदर पुनिया, कनाडा	सदस्य
62.	श्री अशोक क्षेत्रपाल, प्रधान, आर्य समाज प्रतिनिधि सभा, म्यांमार	सदस्य
63.	श्री प्रकाश आर्य, प्रधान, मध्य भारतीय, आर्य प्रतिनिधि सभा	सदस्य
64.	श्री राधा कृष्ण आर्य, अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा	सदस्य
65.	डॉ. राजेंद्र विद्यालंकार, आंतरिक सदस्य, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा	सदस्य
66.	श्री विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	सदस्य
67.	श्री जोगेंद्र खटटर, महामन्त्री, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ	सदस्य
68.	श्री संजीव चौरसिया, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, बिहार और विधायक	सदस्य
69.	श्री अरुण चौधरी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू	सदस्य
70.	श्री पीयूष आर्य, सचिव, डीएवी ग्रुप ऑफ स्कूल्स, चेन्नई	सदस्य
71.	श्री सत्यानंद आर्य, प्रमुख, परोपकारिणी सभा	सदस्य
72.	डॉ. शशिप्रभा कुमार, पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, जेएनयू, दिल्ली	सदस्य
73.	आचार्य डॉ. सुमेधा, आचार्य श्रीमदयानंद कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, चोटीपुरा	सदस्य
74.	आचार्य नंदिता शास्त्री चतुर्वेद, आचार्य पाणिनि कन्यागुरुकुल, वाराणसी	सदस्य
75.	डॉ. धर्मतेजा, प्रतिनिधि तेलंगाना आर्य समाज	सदस्य
76.	श्री माधव प्रसाद पुडेल, विभागाध्यक्ष, केंद्रीय संस्कृत विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल	सदस्य
77.	श्री महेंद्र सिंह राजपूत, प्रमुख, आर्य प्रतिनिधि सभा, असम	सदस्य
78.	श्री सिद्धार्थ भार्गव, संस्थापक निदेशक, आनंदधाम रिट्रीट्स प्राइवेट लिमिटेड, बैंगलोर	सदस्य
79.	श्री ओ. पी. राय, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, सिंगापुर	सदस्य
80.	श्री कमलेश कुमार आर्य, निदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी	सदस्य
81.	श्री राजीव गुलाटी, अध्यक्ष, एमडीएच प्राइवेट लिमिटेड	सदस्य
82.	स्वामी (डॉ.) देवव्रत आचार्य, अध्यक्ष, आर्य वीरदल	सदस्य
83.	डॉ. वेद प्रकाश गर्ग, अध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा, मुंबई	सदस्य
84.	श्री एस. के. रैली, अध्यक्ष, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली	सदस्य
85.	श्री अशोक आर्य, सत्यार्थ प्रकाश ट्रस्ट, उदयपुर	सदस्य
86.	श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, प्रतिनिधि, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश	सदस्य
87.	आचार्य स्वदेश, अध्यक्ष, गुरुकुल, वृन्दावन, मथुरा	सदस्य
88.	आचार्य वाचोनिधि अध्यक्ष, जीवन प्रभात अनाथालय, गुजरात	सदस्य
89.	आचार्य सुकामा, कन्या गुरुकुल, रुड़की, रोहतक	सदस्य
90.	श्री पी. सी. सूद, अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा, हिमाचल प्रदेश	सदस्य
91.	श्री योग मुनि अध्यक्ष, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा	सदस्य
92.	डॉ. वागीश आचार्य, प्रथम आर्य समाज के पुजारी, मुंबई	सदस्य
93.	स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती, गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ	सदस्य
94.	डॉ. ज्वलन्त कुमार, शास्त्री अमेठी वैदिक विद्वान	सदस्य
95.	श्री अरुण प्रकाश वर्मा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	सदस्य
96.	श्री सतीश चड्ढा, महासचिव, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य	सदस्य
97.	डॉ. शशि कांत शर्मा, प्रोफेसर, जन संचार विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय	सदस्य

1. इस समिति के विचारार्थ विषयों के अंतर्गत राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती के स्मरणोत्सव हेतु नीति, निर्देश और कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने हेतु दिशानिर्देश प्रदान करना है। 2. समिति की अवधि तत्काल प्रभाव से प्रारंभ होगी और अगले आदेशों तक जारी रहेगी। 3. समिति के पास सदस्यों को सहयोजित करने की शक्ति होगी।

-उमा नंदूरी, संयुक्त सचिव

श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने दिल्ली सभा के संवर्धक, कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद देकर किया उत्साहवर्धन

मानव सेवा के कार्यों को निरंतर आगे बढ़ाता रहेगा आर्य समाज -सुरेंद्र कुमार आर्य

मानव जीवन में प्रेरणा और उत्साहवर्धन का विशेष महत्व होता है। जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन एवं अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी आर्य समाज की एक ऐसी महान विभूति हैं, जिन्होंने आर्य समाज के सेवा कार्यों को नित निरंतर आगे बढ़ने का बीड़ा उठाया हुआ है। आपकी प्रेरणा और सहयोग से आर्य समाज मानव सेवा के नित नए आयाम स्थापित कर रहा है। अभी पिछले दिनों जब दिल्ली में भयंकर बाढ़ आई और उस समय यमुना के किनारे रहने वाले लोगों के सामने भोजन सहित अनेक तरह की समस्याएं खड़ी हो गई। जब यमुना के दोनों ओर बाढ़ का भयंकर प्रकोप था, लोग वहां जाने से भी डरते थे, तब दिल्ली सभा द्वारा बाढ़ पीड़ितों के लिए लगातार भोजन वितरण, वस्त्र वितरण और अनेक अन्य आवश्यक मूलभूत जरूरतों की पूर्ति की गई।

प्राकृतिक आपदा के विषय में आपने उस समय कहा था कि मानव सेवा और प्राकृतिक आपदाओं में सहयोग करना आर्य समाज की प्राथमिकता है। आपके इसी संदेश को लेकर दिल्ली सभा के संवर्धक, कार्यकर्ता और अधिकारी लगातार जगह-जगह जाकर बाढ़ पीड़ितों को तीनों समय नाश्ता, भोजन और आवश्यक सामान वितरित करते रहे। जिससे सभी ने आर्य समाज और महर्षि दयानंद के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त किया।

गुरुग्राम स्थित जेबीएम के मुख्य कार्यालय में श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी से आशीर्वाद प्राप्त कर प्रसन्न मुद्रा में सभा के संवर्धक, आर्य जी के संदेश को ध्यानपूर्वक सुनते हुए तथा सभा द्वारा संचालित महिला स्वरोजगार योजना के अंतर्गत निर्मित आसनों का अवलोकन कराते हुए श्री विनय आर्य जी

आर्य समाज की ओर से समर्पित कार्यकर्ताओं को 24 अगस्त 2023 को श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी से भेंट करने का अवसर प्राप्त हुआ। जेबीएम के गुड़गांव स्थित कॉरपोरेट कार्यालय में सभा महामंत्री जी के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं की पूरी टीम पहुंची। श्री आर्य जी ने सभी का पीतवस्त्र पहनाकर स्वागत किया और आशीर्वाद देकर उत्साहवर्धन भी किया। इस अवसर पर श्री विनय आर्य जी ने सभी कार्यकर्ताओं का परिचय कराया और आर्य समाज की भावी सेवा योजनाओं के विषय में श्री आर्य जी को अवगत भी कराया। महिला सशक्तिकरण और स्वरोजगार योजना के अंतर्गत बनाए गए आसनों को भी वहां पर प्रदर्शित किया गया। जिन्हें देखकर श्री आर्य जी ने उन्मुक्त हृदय से आर्य समाज के सेवा कार्यों की प्रशंसा की। आपने अपने विशेष संदेश में कहा कि आर्य समाज का मूल मंत्र ही मानव सेवा है, हमेशा आगे बढ़ते रहें और सेवा के कार्यों को आगे बढ़ा रहें। इस अवसर पर जेबीएम ग्रुप के अधिकारियों को आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट किया गया और एल्बम भी भेंट की गई। आर्य जी से मिलकर सभी कार्यकर्ताओं का चेहरा खुशी से चमक रहा था और क्यों न चमके जब एक ऐसे महापुरुष से मिलना हो, जिनकी प्रेरणा अपने आपमें एक बहुत बड़ी शक्ति और संबल का काम करती है, मुख मंडल पर चमक का बिखर जाना स्वाभाविक ही है। सभी कार्यकर्ताओं ने आर्य जी के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त किया और आशीर्वाद लेकर सब अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान कर गए।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती कविताओं की रचना करें और पुरुस्कार पाएं

मुनीन्द्र दयानंद की जय हो- कवि अखिलेश मिश्र

जय कुरीति-पादप-कुठार स्तुति-सार-महासय।
जय जय तरुनादित्य-तेज करुना-बरुनालय।।
परमपूत, अखिलेस-दूत जय विदुष-सिरोमनि।
जय हरिजन-हिय-हार, अनाथनि हित-चिन्तामनि।।
जय महिला-भाग्योदय-करन, सहृदय, नैष्ठिक, नय-निवय।
जय साम्यवाद-सिच्छक-निपुन, दयानन्द आस्तिक-अजय।।

शब्दार्थ- पादप-वृक्ष। कुठार-फरसा, कुल्हाड़ी। तरुनादित्य-तरुणासूर्य। वरुनालय-समुद्र। विदुष-विद्वान्। हरिजन-ईश्वर भक्त। नैष्ठिर्क-निष्ठावान्, निष्ठा युक्त। निचय-समूह। अजय-जो जीता न जा सके।

भावार्थ- कुरीति रूपी वृक्ष के काटने को फरसे की तरह, वेदों के सारांश स्वरूप, उच्चाशय वाले महर्षि आपकी जय हो। आपका तेज मध्याह्न के सूर्य के समान है। आप करुणा के समुद्र हैं। आपकी जय हो। आप अत्यन्त पवित्र परमात्मा के दूत और विद्वान् शिरोमणि हैं। आपकी जय हो। आप ईश्वर भक्तों के हृदय के हार एवम् अनाथों के हित करने वाले चिन्तामणि के समान हैं। आपकी जय हो। आप स्त्री समाज का भाग्य उदय करने वाले, सहृदय, निष्ठावान् एवम् नीति के घर हैं। आपकी जय हो। हे परमहंस दयानन्द जी आप साम्यवाद के योग्य अध्यापक और अजेय आस्तिक हैं। आपकी जय हो।

बीतराग-आदर्स, सदासय-सोभा-सागर।
निखिल-सास्त्र-निष्नात, लेख-रचना में नागर।।
सुद्ध-बुद्ध, विग्यान-धाम ओंकार-परायन।
जय हिन्दी-हिंदुआन-हिन्द-हित-प्रेम-रसायन।।
'अखिलेस, संकराचार्य इव, वक्ता-आलोचक-प्रखर।
जय भार्गवेन्द्र, गांगेयसम्, दयानन्द जुग जुग अमर।।

शब्दार्थ- वीतराग-आसक्ति रहित, त्याग। आदर्स-नमूना। निखिल-सम्पूर्ण। निष्नात-पारंगत। भार्गवेन्द्र-परशुराम। गांयेयभीष्मपितामह जी।

भावार्थ- हे मुनीन्द्र दयानन्द जी आप त्याग के नमूना, अच्छे आशय वाले, शोभा के समुद्र, सम्पूर्ण शास्त्रों के ज्ञाता और प्रगल्भ लेखक हैं। आप शुद्ध-बुद्ध, विज्ञान के घर ओ३म् परमात्मा में तल्लीन, हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्थान के हितैषी और प्रेम के रसायन हैं। आपकी जय हो। अखिलेश कवि कहते हैं कि जगद्गुरु शंकराचार्य की तरह आप मेधावी वक्ता और समालोचक हैं तथा श्री परशुराम जी और भीष्म पितामह ब्रह्मचारी की भांति युग-युग अमर हैं। आपकी जय हो।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के अवसर पर आर्य संदेश के सभी आयु वर्ग के पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद जी के जीवन पर विभिन्न घटना क्रमों पर आधारित कविता की रचना करके संपादक, आर्य संदेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001, पर भेजें अथवा Email- aryasandeshdelhi@gmail.com करें। आपकी स्तरीय कविता को आर्य संदेश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा और विशेष अवसर पर आपको पुरुस्कृत भी किया जाएगा।

पृष्ठ 1 का शेष

गुरुकुल सैनिक विहार के छात्र-छात्राओं ने महामहिम राष्ट्रपति जी एवं माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की कलाई में राखी बांधकर आशीर्वाद प्राप्त किया। यह अपने आपमें अत्यंत ऐतिहासिक और प्रेरक दृश्य था, छात्र-छात्राओं ने राष्ट्रपति जी एवं प्रधानमंत्री जी को कविताएं भी सुनाई और प्रेरक भजन भी प्रस्तुत किए। इस समाचार को भारत के सम्मानित समाचार पत्रों में भी स्थान दिया गया, आर्य समाज की तीनों संस्थाओं के छात्र-छात्राओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं और राष्ट्रपति जी एवं प्रधानमंत्री जी का हार्दिक आभार।

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज की महान विभूतियां श्री बृजमोहन मुंजाल जी एवं पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के 100वें जयंती वर्ष पर

की 100वीं जयंती मुंजाल परिवार द्वारा हर्षोल्लास पूर्वक मनाई जा रही है। यह वैदिक केंद्र अपने आपमें सम्पूर्ण आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है, इस ऊंचे मंच पर पिरामिड के आकार में निर्मित, 'बृजमोहन मुंजाल वैदिक केंद्र' (बी.एम.वी.के.) का उद्घाटन मुंजाल परिवार द्वारा किया गया, जहां श्रीमती रेनू मुंजाल, श्रीमती गीता आनंद, डॉ. पवन मुंजाल, श्री. सुमन कांत मुंजाल और श्री सुनील कांत

उद्घाटन अवसर पर उदबोधन देते हुए सर्वश्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, योगेश मुंजाल, राजीव गुलाटी, विनय आर्य, आचार्य वागीश, आचार्य अखिलेश्वर, डॉ. महेश विद्यालंकार, सुमन कांत मुंजाल, धर्मपाल आर्य एवं श्रोतागण।

वैदिक केंद्र के उद्घाटन अवसर पर महानुभावों के विचार

इस अवसर पर जेबीएम ग्रुप के अध्यक्ष एवं अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने श्री बृजमोहन मुंजाल जी एवं महाशय धर्मपाल जी की 100वीं जयंती पर दोनों महापुरुषों को अपना आदर्श बताया और उन्हें शत-शत नमन करते हुए बृजमोहन मुंजाल वैदिक केंद्र एवं महाशय धर्मपाल एमडीएच इंटरनेशनल हाउस के उद्घाटन के लिए दोनों परिवारों को सामूहिक रूप से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं प्रदान की। आपने हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह और भी खुशी की बात है कि यह अवसर महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के दौरान ही मनाया जा रहा है। उन्होंने पुनः मुंजाल परिवार और महाशय परिवार तथा उपस्थित महानुभावों को बधाई और शुभकामनाएं प्रदान की।

उद्बोधनों के इस क्रम में श्री योगेश मुंजाल जी ने अपने संदेश में वैदिक केन्द्र के भव्य भवन की फाउंडेशन से लेकर निर्माण और उद्घाटन तक की यात्रा का संक्षिप्त और सरलता पूर्वक वर्णन किया और सभी को अपनी शुभकामनाएं दी तथा बाबूजी और महाशय जी को सादर नमन किया।

श्री सुनील कांत मुंजाल जी ने अपने विशेष उद्बोधन में कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आधुनिक परिवेश में मानव निर्माण के क्षेत्र में आर्य समाज का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए युवा पीढ़ी को आर्य समाज से जोड़ने की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसके लिए हमें अत्यंत खुले दिल और खुले दिमाग से विचार करना होगा। महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज की विचारधारा आध्यात्मिक और साइंटिफिक रूप से बहुत ही कल्याणकारी है। लेकिन हम दूसरों की निंदा करके युवा पीढ़ी को अपने साथ नहीं जोड़ सकते। इसलिए हमें पूरे योजनाबद्ध तरीके से अपना पक्ष उनके सामने रखना चाहिए। महर्षि की 200वीं जयंती के दो वर्षीय योजना के मध्य बाबूजी और महाशय जी की 100वीं जयंती के अवसर पर सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देते हुए आपने विशेष रूप से वैदिक निर्माण केंद्र के सदुपयोग हेतु बताया कि यह स्थान नये संवाद, नई संरचना और नये ज्ञान की वृद्धि के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। इसके निर्माण में इंजीनियरों सहित सभी कार्यकर्ताओं की प्रशंसा की और सबका धन्यवाद किया।

महाशय राजीव गुलाटी जी ने अपने उद्बोधन में उपस्थित सभी महानुभावों को संबोधित करते हुए कहा कि महाशय जी और बाबू जी की 100वीं जयंती और महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती को हम उत्सव के रूप में मना रहे हैं। महाशय जी का जीवन काफी संघर्षों से भरा रहा, लेकिन उन्होंने राष्ट्र, धर्म और मानव सेवा के लिए हमेशा अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। आज महाशय धर्मपाल एमडीएच इंटरनेशनल हाउस (अतिथि शाला) का उद्घाटन करते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता और आनंद का अनुभव हो रहा है। महाशय जी चाहते थे कि सभी देश और दुनिया से आने वाले संन्यासी, साधु, विद्वान सुख पूर्वक भारत की राजधानी दिल्ली में रहे और आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाएं। इस अवसर पर मैं सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

आर्य समाज जी.के.-1 नई दिल्ली में 'बृजमोहन मुंजाल वैदिक केंद्र' एवं महाशय धर्मपाल एमडीएच इंटरनेशनल हाउस का उद्घाटन करते हुए श्रीमती रेनू मुंजाल, श्रीमती गीता आनंद, सर्वश्री डॉ. पवन मुंजाल, सुमन कांत मुंजाल, सुनील कांत मुंजाल, योगेश मुंजाल, महाशय राजीव गुलाटी और श्रीमती ज्योति गुलाटी, प्रेम अरोड़ा एवं अन्य महानुभाव।

मुंजाल जी इत्यादि महानुभाव अपने परिवार जनों के साथ उपस्थित थे। वैदिक केंद्र के उद्घाटन के अनुक्रम में महाशय राजीव गुलाटी और श्रीमती ज्योति गुलाटी के द्वारा एमडीएच परिवार जनों के साथ आर्य समाज के भामाशाह महाशय धर्मपाल गुलटी जी की स्मृति में उनकी 100वें जयंती वर्ष पर वैदिक केंद्र में 'महाशय धर्मपाल एमडीएच इंटरनेशनल हाउस' के एमडीएच ब्लॉक का भी उद्घाटन विधिवत संपन्न हुआ। इस अवसर पर एमडीएच परिवार से श्री प्रेम अरोड़ा एवं अन्य महानुभाव उपस्थित रहे।

इस भव्य वैदिक केंद्र को डीएफआई आर्किटेक्ट के द्वारा डिजाइन किया गया। गूनमीत सिंह चौहान के अनुसार यूनिवर्सल एक्सेस के साथ 400+ सीटर ऑडिटोरियम का सुंदर स्थान है, जो अत्याधुनिक यूपीएस समर्थित ऑडियो विजुअल सिस्टम, एचवीएसी सिस्टम, प्रदूषण रहित और अग्नि सुरक्षा प्रणाली से लैस है और डीजी बैकअप से सुसज्जित है। वैदिक केंद्र में अभी श्री हर्ष मुंजाल लाइब्रेरी और श्री राजीव चौधरी मेडिटेशन हॉल का काम भी प्रगति पर है। वैदिक केंद्र में आर्य समाज के प्रतिनिधियों और योग साधना के प्रतिभागियों के लिए आधुनिक सुविधाओं से युक्त 10 कमरे निर्मित हैं। सुंदर हरियाली, रंग बिरंगे फूलों से सजा धजा मनोहारी वातावरण है। इस अवसर पर वैदिक विद्वान डॉ. वागीश आचार्य जी, डॉ. महेश विद्यालंकार जी और आचार्य अखिलेश्वर जी ने सारगर्भित प्रेरक उद्बोधन दिया। श्री सुनील कांत मुंजाल जी ने अपने उद्बोधन से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया, जिसमें उन्होंने युवा पीढ़ी के साथ जुड़ने के तरीके बताए और इसकी आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया। वैदिक दर्शन की उनकी आधुनिक व्याख्या, जो नई वास्तविकता को खुले दिमाग से स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करती है, ने दर्शकों को प्रभावित किया।

इस कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य जी, जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन, संयोजन समिति के अध्यक्ष और अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने भी वैदिक केंद्र के उद्घाटन के लिए सभी महानुभावों को शुभकामनाएं और बधाई दी। श्री विनय आर्य, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने संबोधन में बीएमवीके की तुलना आर्य समाज के विश्व स्तर पर प्रसिद्ध भवनों से की और बीएमवीके को एक पायदान ऊपर पाया।

कार्यक्रम के दौरान स्वर्गीय श्री बृजमोहन मुंजाल जी और स्वर्गीय महाशय धर्मपाल गुलाटी जी के जीवन पर दो लघु फिल्में भी दिखाई गईं। जलपान के साथ समाप्त हुए इस कार्यक्रम के दौरान आर्य समाज की मधुर भजन गायिका डॉ. सुकृति माथुर ने मधुर भजन प्रस्तुत किए।

-उपप्रधान, राजीव भटनागर

Taking Bath in the Source of Knowledge

Continuing the last issue

Saint Muni Virja Nand observed that people ignore the order of the Sutras after reading 'Sidhant Kaumidi'. Books of Bhatto ji Dixit seem to be very easy and simple, but those are very typical (not easily understood). They have destroyed the Vyakran written by Rishi. His soul became irritated and he got ready for revolt against the prevailing system. During revolt people generally do not care about the rules and regulation and cross the limit and go against those in the same way when Dandiji revolted, he also crossed the limit. There is no doubt in this statement. Any book does not become finished by throwing it into the river or by touching shoes with it. The result is generaly unexpected and unwanted. At present number of printed books of Sidhant Kaumudi is much more than the time or revolt by Dandiji. But it does not mean that his efforts were of no use. The truth he experienced and came across with, he and made his student feel it also. It was accepted by a large number of people across the country. At present number of wise persons believing in order of Sutras and number of printed books of Mool (original) Ashtadhyai is much more than Dandiji's time. Truth has shown its strength. For this if that was 'crossing the limits, that is likely to be forgotten judging the positive result of that action. Where as its repetition is totally avoidable (ignorable), on the other hand it is not wise to complain against it again and again.

Any how, Swami Dayanand Saraswati reached and knocked at the cottage of such Dandi Virja Nand ji on Kartik Shude 2, Vikrami Sanvat 1917 (14 November, 1860). After introduction Dandiji asked, " Have you studied any Vyakran?" Swamiji replied "I have studied Saraswat". Then Dandiji ordered, "Go and throw away all the non-Vedic (unaarsh) books into the Yanuna River Only then you will be entitled to study Aarsh(Vedic) books". Daya Nand obeyed the order and tried to get Vidyamarta under the guidance of befitting (able) guru.

Student life of Swamiji was quite imitable. He consumed some grams which hs got from Durga Khatri as help. Baba Amar Lal Joshi arranged for food for many students of Mathura including Swamiji. He often studied for some time before he went to bed. Lala Gowardhan Saraf (Jewler) paid for the oil consumed for that. It was 4 Annans per month. Similarly other kind persons managed for other necessary requirements and the students got full chance to study while serving the guru.

Nature of Dandiji was very harsh He would be very angry sometimes. He punished students with a stick. Once Swamiji was also punished with a stick that stuck his hand. His hand was hurt badly and for ever throughout his life. Sign of injury reminded him of guruji's blessing. One day he was shut in the door. Then two of his friends requested guruji to excuses him for his mis-deed. Then he excused him.

Life of Maharishi Dayanand was that of a Sanyasi. He decided to remain Brahamchari and Truth seeker (Jigyasi) throughout his life. One day Swamiji was performing Sandya on the bank of the river. When he opened his eyes after sandhya he observed that some young girl was touching his feet. She had done so out of devotion and respect. But Swamiji considered touch of the girl as a sin. Then he spent so many days living alone without food to purify his heart that was hurt because of touch of a girl.

To be continued in next issue

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज सागरपुर का चुनाव संपन्न

प्रधान : श्रीमती विद्यावती आर्या
मंत्री : श्री राकेश कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री कमल सोनी

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की नई कार्यकारणी गठित

श्री किशनलाल गहलोत- प्रधान
श्री जीव वर्धन शास्त्री- मंत्री
श्री जयसिंह गहलोत- कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की नई कार्यकारणी मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री देवेंद्र सोनी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। श्री किशन लाल गहलोत जी, प्रधान, श्री जीव वर्धन शास्त्री जी, मंत्री एवं श्री जयसिंह गहलोत जी, कोषाध्यक्ष चुने गए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक बधाई।

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु
ब्रेल लिपि में
सत्यार्थ प्रकाश
मात्र 2000/-रु
अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

आर्य समाज कैलाश -ग्रेटर कैलाश-1 द्वारा

वैदिक बुद्धिमत्ता एवं पतंजलि योग परिचय शिविर का आयोजन

दिनांक- 9 से 11 सितंबर 2023 तक

शिविर में भाग लेने वाले इच्छुक महानुभाव 7 सितंबर 2023 तक अपना नाम पंजीकृत कराएं।

अधिक जानकारी एवं पंजीकरण हेतु संपर्क करें, श्री राजीव भटनागर (उपप्रधान) नं. 9810183908, राजेन्द्र कुमार वर्मा (मंत्री) 9810045198

महर्षि दयानन्द उवाच परोपकारी एवं प्रेरक शिक्षाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश से लेकर उनकी जीवनी, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्याद्देश्य रत्नमाला, सवमंतव्यामंतव्य प्रकाश, उपदेश मंजरी आदि अनेक ग्रंथों से चयनित परोपकारी और प्रेरक शिक्षाएं आर्य संदेश के नियत नियमित कॉलम में महर्षि दयानंद उवाच के नाम से प्रकाशित की जा रही हैं। सभी पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की इन जनकल्याण कारी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सभी आप इनका सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार करें और महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें...

प्रेरक प्रसंग

पण्डित ताराचरण से शास्त्रार्थ

महर्षि का पण्डित ताराचरण से जो शास्त्रार्थ हुआ था, उसकी चर्चा प्राय: सब जीवन-चरित्रों में थोड़ी-बहुत मिलती है। श्रीयुत दत्तजी भी इसके एक प्रत्यक्षदर्शी थे, अत: यहाँ हम उनके इस शास्त्रार्थ विषयक विचार पाठकों के लाभ के लिए देते हैं। इस शास्त्रार्थ का महत्त्व इस दृष्टि से विशेष है कि पण्डित श्री ताराचरणजी काशी के महाराज श्री ईश्वरी नारायण सिंह के विशेष राजपण्डित थे। पण्डितजी ने भी काशी के 1869 शास्त्रार्थ में भाग लिया था। विषय इस शास्त्रार्थ का भी वही था अर्थात् 'प्रतिमा-पूजन'।

पण्डित ताराचरण अकेले ही तो न थे। साथ भाटपाड़ा (भट्टपल्ली) की पण्डित मण्डली भी थी। महर्षि यहाँ भी अकेले ही थे, जैसे काशी में थे। श्रीदत्त लिखते हैं, ''शास्त्रार्थ बराबर का न था, कारण ताराचरण तर्करत्न में न तो ऋषि दयानन्द जैसी योग्यता तथा विद्वत्ता थी और न ही महर्षि दयानन्द जैसी वाणी का बल था। इस शास्त्रार्थ में बाबू भूदेवजी, बाबू श्री अक्षयचन्द सरकार तथा पादरी लालबिहारी सरीखे प्रतिष्ठित महानुभाव उपस्थित थे।''

किसी को सामने आने का साहस न था

श्री मोहनदत्त लिखते हैं कि जिनको अपने शास्त्रज्ञान का अथवा संस्कृतज्ञ होने का अभिमान था, उनमें से कोई भी उनसे शास्त्रार्थ करने का साहस नहीं कर पाता था। उनके सामने आने से सब डरते थे। सज्जन लोग उनके दर्शन को आते रहते थे। उनके दरबार में भीड़ लगी रहती थी।

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

असत्य मतों का खण्डनः- जैसा मैं इस्लाम मत का खण्डन करता हूँ, ईसाई मत का खण्डन भी कदापि उस से कम नहीं करता। यहाँ तक कि मैं अपने हिन्दुओं की वर्तमान धार्मिक अवस्था पर भी सहमति प्रकट नहीं करता।

(ऋ. द. स. के पत्र और विज्ञापन प्र. भा. पृ. 185)

अस्पृश्यता और भेदभाव से देश की हानिः- इसी मूढ़ता से इन लोगों ने चौका लगाते-लगाते विरोध करते-करते सब स्वातन्त्र्य, आनन्द, धन-राज्य विद्या और पुरुषार्थ पर चौका लगाकर हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं और इच्छा करते हैं कि कुछ पदार्थ मिले तो पकाकर खावें। परन्तु वैसा न होने पर जानो सब आर्यावर्त देशभर में चौका लगा के सर्वथा नष्ट कर दिया है।

(सत्यार्थप्रकाश पृ. 250)

पृष्ठ 2 का शेष

शिक्षक जगत के लिए प्रेरणा के प्रकाश स्तंभ

स्वामी विरजानंद जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी से संग्रहीत सारी पुस्तकों को यमुना में फेंकने का आदेश दिया, महर्षि ने गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए अपनी समस्त पुस्तकों को बिना विचारे यमुना में प्रवाहित कर दिया। अगर इस विषय में विचार किया जाए तो किसी व्यक्ति को 35 वर्ष की अवस्था में गुरु के चरणों में बैठकर पढ़ने के लिए किसी ने आज्ञा नहीं दी थी, उनके भीतर प्रबल जिज्ञासा थी, संकल्प था और तीव्र प्यास थी। नहीं तो इस उम्र में किसी को गुरु चरणों में बैठकर शिक्षा प्राप्ति के लिए कहा जाए तो वह यही कहेगा कि क्या इस आयु में भी पढ़ा जा सकता है और उस पर भी सबसे पहले गुरु यही आदेश करें कि अब तक का समस्त पुस्तक संग्रह नदी में फेंक दो, इसका अर्थ यही था कि अब तक जो शिक्षा प्राप्त की है उसे भूला दो, ऐसे में क्या शिष्य अपने गुरु की आज्ञा का पालन करेगा? आधुनिक परिवेश में तो 35 वर्ष की आयु वाला शिष्य गुरु की शरण में जाने वाला ही नहीं और चला भी गया तो अपनी संचित पुस्तकों को फेंकेगा भी नहीं। लेकिन एक महान गुरु के महान शिष्य महर्षि दयानंद सरस्वती जी की निष्ठा, विश्वास और संकल्प शक्ति अद्भुत और अनुपम थी। महर्षि ने गुरु विरजानंद जी की आज्ञा को सर्वोपरि माना है और संपूर्ण शिष्य समुदाय को यह प्रेरणा प्रदान की है कि गुणी, ज्ञानी और सदाचारी गुरु को तो मानिए लेकिन गुरु की उचित आज्ञा को भी सर्वोपरि मानिए, तभी शिष्य का उद्देश्य पूरा होता है।

तीन वर्ष की अल्प अवधि में पूर्ण हुई शिक्षा

सन् 1860 से 1863 तक केवल 3 वर्ष में महर्षि दयानंद ने गुरु विरजानंद जी की शिक्षा ग्रहण की। इन 3 वर्षों में गुरु विरजानंद जी से अष्टाध्याई, महाभाष्य, निरुक्त आदि संपूर्ण व्याकरण की शिक्षा ग्रहण कर ली थी। इससे पता चलता है कि महर्षि की पात्रता, मेधा और शिक्षा प्राप्ति की उत्कृट इच्छा कितनी प्रबल थी। स्वामी विरजानंद जी एक बार पाठ पढ़ाने के बाद उसकी पुनरावृत्ति नहीं करते थे, एक दिन पाठ के विस्मृत होने के कारण महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने अपने गुरु विरजानंद जी से पुनः पाठ पढ़ाने का अनुरोध किया, इस पर स्वामी विरजानंद जी ने दयानंद जी को डांटते हुए कहा था कि यमुना में डूबकर मर जाओ लेकिन दुबारा पाठ नहीं पढ़ाऊंगा। स्वामी जी यमुना के किनारे ध्यान में बैठकर चिंतन मनन करने लगे और लंबे समय तक ध्यान करने पर उन्हें अपना पाठ स्मरण हो आया, महर्षि गुरु विरजानंद जी के पास आए और कहने लगे कि गुरुवर मुझे आपके द्वारा पढाया गया पाठ स्मरण हो गया है, तभी विरजानंद जी ने पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाया।

इससे ज्ञात होता है कि शिष्य को सावधान होकर पढ़ना चाहिए और गुरु को पूरा सम्मान देना चाहिए, तभी शिक्षा फलीभूत होती है। आधुनिक परिवेश में तो गुरु और शिष्य वीडियो बना बनाकर पढ़ते हैं, तब भी उनकी साधना सफल नहीं होती। क्योंकि सावधान होकर पढ़ने से सफलता मिलती है।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की गुरुभक्ति, सेवा भावना और समर्पण अपने आपमें बड़ा महान था। महर्षि अपने गुरु के स्नान के लिए यमुना जल लेकर आते थे, उनकी कुटिया की साफ सफाई करना और उनके हर सेवा कार्य को पूरी निष्ठा के साथ करना यह उनका दैनिक कर्तव्य था। जिसे उन्होंने पूरी निष्ठा के साथ निभाया। एक बार महर्षि दयानंद सरस्वती जी गुरु कुटिया में झाड़ू लगा रहे थे कि तभी स्वामी विरजानंद जी स्नान करके आ गये और उनका पैर कूड़े पर पड़ गया। स्वामी विरजानंद जी को महर्षि दयानंद जी पर इतना क्रोध आया कि उन्होंने महर्षि की डंडे से प्रताड़ना की। इस पर महर्षि दयानंद सरस्वती शांत सहज भाव से गुरु द्वारा दिए गए दंड को विनम्रता पूर्वक स्वीकार करते रहे और बाद में गुरु चरणों को पकड़ कर कहने लगे की हे गुरुवर, मेरा शरीर तो कठोर है लेकिन आपके हाथ तो कोमल हैं, कही मुझे दंड देते हुए आपके हाथों में चोट तो नहीं लग गई।

आधुनिक परिवेश में देखा जाए तो गुरु ही क्या माता-पिता भी बच्चों को, शिष्य को प्रताड़ित करने के अधिकारी नहीं हैं और अगर कोई कर भी देता है तो उसको उसका स्वयं दंड भुगतना पड़ता है। लेकिन महर्षि दयानंद की गुरु चरणों के प्रति श्रद्धा निष्ठा अद्भुत थी और उन्होंने मानव समाज को संदेश दिया कि अगर गुरु से शिक्षा प्राप्त करनी है तो विनम्र होना पड़ेगा, अपने भीतर पात्रता विकसित करनी होगी, तभी तुम सच्चे शिष्य बनकर कल्याण की राह पर आगे बढ़ सकते हो।

शिक्षक दिवस पर गुरु एवं शिष्यों को संदेश

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 5 सितंबर 2023 का शिक्षक दिवस हमारे सामने है। आज के समय में स्कूल और कॉलेजों में जो गुरु और शिष्य के आदर्शों की गरिमा समाप्त होती जा रही है। गुरु के नाम पर अध्यापक वर्ग ने शिक्षा का व्यापार शुरू कर दिया है और शिष्य समाज अपने हिसाब से केवल जीविका उपार्जन के लिए शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। शिक्षा का अर्थ केवल यही नहीं होता कि हम केवल अपने लिए और अपनों के लिए खाना कमाना सीखें, शिक्षा तो व्यक्ति, परिवार, समाज देश और दुनिया में आदर्श स्थापित करने की शक्ति होती है। राष्ट्र और मानव सेवा की भावनाओं का निर्माण ही शिक्षा का सच्चा अभिप्राय तथा अभिन्न अंग है। इन समस्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती और गुरु विरजानंद जी ने जो गुरु शिष्य परंपरा के आदर्श प्रस्तुत किए हैं वे युग युगांतरों तक मानव समाज को सुदिशा प्रदान करते रहेंगे।

गुरु दक्षिणा की परंपरा और मानवजाति कल्याण

हमारी प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में गुरु दक्षिणा की महान परंपरा और अपार गरिमा थी। महर्षि दयानंद सरस्वती जी अपने गुरु विरजानंद जी से शिक्षा प्राप्त कर जब गुरु दक्षिणा के रूप में गुरु को प्रिय भेंट लौंग समर्पित करने लगे तब गुरु विरजानंद ने अपने प्रिय शिष्य महर्षि दयानंद सरस्वती को कहा कि मुझे गुरु दक्षिणा देना ही चाहते हो तो जो आज भारत में अज्ञान, अविद्या का अंधेरा छाया हुआ है, चारों तरफ ढोंग, पाखंड और अंधविश्वास का बसेरा है, अगर आप दक्षिणा देना ही चाहते हो तो दीन दुखी मानवजाति की इस पीड़ा को दूर करो, वेदों के ज्ञान से नए सवेरे का उदय करो, मानव समाज में जो भय, भ्रम व्याप्त है, पूरा मानव समाज दुःख, पीड़ा और संतापों से त्रस्त है, सबको जीने की राह दिखाओ। देश और धर्म के लिए अपना पूरा जीवन नौछावर कर दो, महर्षि दयानंद सरस्वती ने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए अपना पूरा जीवन वैदिक, धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसार और विस्तार के लिए समर्पित कर दिया। स्वयं ने जहर पीकर वे समाज को अमृत पिला गए। गुरु शिष्य परंपरा के प्रेरक स्तंभ महर्षि दयानंद सरस्वती और गुरु विरजानंद को शत-शत नमन।

आर्य समाज की स्थापना करके महर्षि दयानंद ने एक नये गौरवशाली युग का आरंभ किया। ऐसे गुरु शिष्य की आदर्श परंपरा को शत-शत नमन करने का शुभ अवसर ही शिक्षा दिवस है, शिक्षा दिवस पर भारत के विद्यार्थियों को गुरु विरजानंद और महर्षि दयानंद सरस्वती जी के आदर्श जीवन को पढ़ने का संकल्प लेना चाहिए और अपने जीवन का सर्वांगीण विकास करना चाहिए।

-संपादक

आर्य रत्न ठा. विक्रम सिंह जी

के 80वें जन्म दिवस पर अभिनन्दन एवं वेद निधि स्थापना समारोह।
स्थान: ताल कटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली
दिनांक: 19 सितम्बर 2023 (मंगलवार)
समय: प्रात: 7:30 बजे से दोपहर 2:00 बजे तक
इस भव्य समारोह में आप अपने परिजनों एवं मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।
संपर्क सूत्र:- 011 45791152, 9810764795, 9313824153

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

वैदिक शगुन लिफाफे
महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में
मात्र 400/- रु. सैकड़ा
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

शोक समाचार

डॉ. श्री प्रमोद गोयल जी का निधन

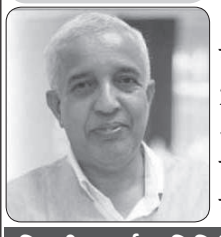

आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री, आर्य समाज की विचारधारा को हृदय से अपनाने वाले डॉ. श्री प्रमोद गोयल जी का 25 अगस्त 2023 को अकस्मात निधन हो गया। आपका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। और शांति यज्ञ, श्रद्धांजलि सभा और रस्म पगड़ी आर्य समाज सेक्टर-1 बी.एच.ई.एल. हरिद्वार में 29 अगस्त 2023 को संपन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक

सोमवार 04 सितम्बर, 2023 से रविवार 10 सितम्बर, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं० डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 06-07-08 सितम्बर, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 06 सितम्बर, 2023

ओ३म्
जयपुर चलो
जयपुर चलो
महान समाज सुधारक, आर्यसमाज के संस्थापक
महर्षि दयानन्द सरस्वती
की 200 वीं जयन्ती
पर दो वर्षीय विश्वव्यापी आयोजनों के अन्तर्गत
भव्य आर्य महासम्मेलन
दिनांक : 23-24 सितम्बर, 2023
स्थान : राजस्थान विश्वविद्यालय, कॉलेज ग्राउंड, JLN मार्ग, जयपुर

200 वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर आपका हार्दिक स्वागत करती है।
प्रधान – किशनलाल गहलोत, मंत्री – जीव वर्धन शास्त्री, कोषाध्यक्ष – जयसिंह गहलोत

प्रतिष्ठा में,

ओ३म्
आर्य समाजों की विभिन्न गतिविधियों से सम्बन्धित रजिस्टर उपलब्ध हैं
- आर्य समाज सदस्यता रजिस्टर
- आर्य समाज सदस्यता शुल्क (चन्दा) रजिस्टर
- भवन आरक्षण रजिस्टर
- आर्य वीर दल रजिस्टर
- आर्य वीरांगना दल रजिस्टर
- संस्कार (पुरोहित रजिस्टर)
- आर्य युवा महिला मिलन सदस्यता रजिस्टर
- आर्य बाल वाटिका रजिस्टर
- आर्य कुमार सभा रजिस्टर
- रसीद बुक रजिस्टर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

JioTV Jio TV+
आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल
Arya Sandesh TV
आर्य सन्देश टीवी
अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी
Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	मुद्रित मूल्य ₹60	प्रचारार्थ ₹40
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	₹100	₹60
पॉकेट संस्करण	₹80	₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	₹150	₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8	₹150	₹100
उपहार संस्करण	₹1100	₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	₹200	₹130
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	₹250	₹170

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE TOWARDS CREATING A CLEANER | GREENER | SAFER TOMORROW.
JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● संपादकः धर्मपाल आर्य ● सह संपादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह